ISSN 2277-2359
Vol-12-Issue-02
February 2020

मूल्यों की अभिधात्मकता और वर्गीकरण

डॉ अमिता जैन

सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाड़नूँ।

सारांश

भारतवर्ष अनेकता में भी एकता का देश है। यहाँ की विविधतापूर्ण संस्कृति है। मूल्यों के कारण यहाँ की संस्कृति विश्व की सबसे श्रेष्ठ संस्कृति है। यहाँ शिक्षा, संस्कृति, व्यक्ति के विकास में मूल्यों को विशेष महत्त्व है। वास्तविक रूप में मूल्य क्या है? विद्वानों ने किस प्रकार मूल्यों को परिभाषित किया है? मूल्यों का वर्गीकरण कैसे किया है? आदि विचारों से ओतप्रोत इस आलेख में मूल्य अभिधात्मकता का प्रलेखन है। वेद, उपनिषद्, गीता, रामायण, पुराण, रामचरित मानस, आगम, बाईबिल, कुरान आदि मूल्य शिक्षा के सूत्रपात ग्रन्थ हैं। इनके अध्ययन-अध्यापन से मनुष्य श्रेष्ठ गुणों से परिपूर्ण हो सकेगा।

मुख्य शब्द: **मूल्य, सत्य, शिव, सुन्दर, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, वर्गीकरण।**

प्रस्तावना

मूल्य एक अमूर्त प्रत्यय है। यह मनुष्य जीवन की सार्थकता, उसका विश्वास, धर्म तथा उसका अस्तित्व है। मूल्य का सम्बन्ध मनुष्य के चाल-चलन, आचार-विचार, व्यवहार और जीवनचर्या के तरीकों से है। मूल्य मानव जीवन को परिमार्जित, परिष्कृत व परिशोधन करते हैं। यह आचरण और व्यवहार को नियंत्रित, निर्देशित और प्रेरणा प्रदान करते हैं। मूल्यों से ही मनुष्य शांति, अहिंसा, ईमानदारी, अनुशासन, कर्त्तव्यपालन आदि से ओत-प्रोत होते हैं। मूल्यों से ही किसी समाज, सभ्यता व संस्कृति की पहचान होती है। मूल्यों के जीवन में समावेश से ही मानव जीवन उत्कृष्ट, उन्नत व सफल होता है। मूल्य ही मानव को श्रेष्ठ संस्कार से युक्त करके उसे आदर्श व उत्तम बनाते हैं। मूल्यविहीन मनुष्य नैतिकता, चारित्रिकता एवं आचरणों से भी पतित हो जाता है और बुराईयों, दुर्गुणों, अपराधों से ग्रस्त हो जाता है। मूल्यों से मनुष्य जीवन सुव्यवस्थित, सुनियोजित, सार्थक व उपयोगी हो जाता है। मनुष्य के चरित्र निर्माण का मूलाधार शिक्षा और मूल्य है।

Copyright©authors

ISSN 2277-2359
Vol-12-Issue-02
February 2020

मूल्य की अभिव्यंजना और वर्गीकरण

अग्रेंजी के Value शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के टंसमतम से हुई जिसका अर्थ है-

- **योग्यता (Ability)]**
- **उपयोगिता (Utility)**
- **महत्त्व (Importance)**

मूल्य

मूल शब्द से बना है, जिसका अर्थ है, जो इच्छित है वही मूल्य है।

किसी वस्तु की 'गुणवत्ता' 'लाभकारिता' 'उपयोगिता' या 'महत्त्वात्मिकता' उसके मूल्य को निर्धारित करती है। हम जिस वस्तु को जितना लाभकारी, जरूरी और महत्त्वपूर्ण मानते हैं। हमारे लिए वह वस्तु उतनी ही 'मूल्यवान' होती है।

शाब्दिक अर्थ में मूल्य से तात्पर्य

व्यक्ति या वस्तु का वह गुण जिसके कारण उसका महत्त्व, सम्मान या उपयोग समझा जाता है, वही मूल्य है। मूल्य किसी वस्तु के क्रय-विक्रय में दी जाने वाली धनराशि को ही नहीं कहते अपितु वस्तु में निहित गुण के कारण उसका मूल्य निर्धारित होता है यथा बकरी का दूध और गाय का दूध दोनों के मूल्य में गुणों के कारण अन्तर होता है। डॉ. ए.पी. जे. कलाम और सामान्य व्यक्ति में अन्तर उसमें निहित मूल्य या गुण के कारण होता है।

हमारे मन में प्रश्न उठता है कि आखिर व्यक्ति में कैसे निर्धारित करें कि उसमें अमुख मूल्य है? व्यक्ति की पसन्द, रूचियाँ, उसकी इच्छाएं, आकांक्षाएँ ही मूल्य को प्रकट करती है यथा गांधी जी को शांति व अहिंसा सबसे अधिक पसन्द थी। किसी भी कार्य में उसका उपयोग करते थे। जिसके कारण गांधी जी की पहचान बनी। जो व्यक्ति पूजा पाठ में विश्वास करता है, हम मानते हैं कि उसमें आध्यात्मिक मूल्य है। जो समाज सेवा करता है उसमें सामाजिक मूल्य है, जो धन संग्रह करता है उसमें आर्थिक मूल्य है, जो श्रेष्ठ नागरिक बनने की बात करता है उसमें राजनैतिक मूल्य है। विज्ञान का छात्र विज्ञान की चीजों को मूल्यवान समझता है तो उसमें वैज्ञानिक मूल्य है। कला का छात्र कला की चीजों को महत्त्व देता है तो उसमें

ISSN 2277-2359
Vol-12-Issue-02
February 2020

कलात्मक मूल्य है। भाषा का छात्र भाषायी विषयों को महत्त्व देता है तो उसमें भाषायी मूल्य है।

मूल्य की परिभाषाएं

1. **ब्राइट मैन- ''आदर्श व्यवहार को मूल्य कहते हैं।''**
2. **आटवे-''मनुष्य जिसके लिए जीता है, जिसके लिए मरता है, वही उसका मूल्य कहलाता है।''**
3. **जे. काने-''वे आदर्श विश्वास तथा मानक जो किसी समाज या उसके अधिकांश सदस्यों द्वारा धारण किये जाते हैं मूल्य कहलाते हैं।''**
4. **टाइटस-''मूल्य वे हैं जो मनुष्य की आवश्यकताओं और इच्छाओं की संतुष्टि करते हैं।'**
5. **गांधी जी-''मुझे लगा कि लड़के पुस्तकों तथा व्याख्यानों की अपेक्षा अध्यापकों के जीवन से अधिक सीखते हैं। उस अध्यापक को धिक्कार है जो मुख से एक बात कहता है तथा जीवन से भिन्न प्रकार का व्यवहार करता है।''**
6. **फिलक-''हम वास्तव में जिसे सम्मान देते है, चाहते हैं या महत्त्वपूर्ण समझते हैं, वहीं मूल्य है।''**
7. **रथ व अन्य-''मूल्य तीन प्रक्रियाओं पर आधारित होते हैं- चुनना, महत्त्व देना एवं क्रिया करना।**
8. **जेम्स पी. शेवर तथा विलियम स्ट्रांग-''मूल्य महत्त्व के बारे में निर्णय के मानदण्ड तथा नियम हैं। ये वे मानदण्ड हैं जिनसे हम चीजों (लोगों, वस्तुओं, विचारों, क्रियाओं तथा परिस्थिति) के अच्छा, महत्त्वपूर्ण व वांछनीय होने अथवा खराब, महत्त्वहीन व तिरस्करणीय होने के बारे में निर्णय करते हैं।''**

किसी वस्तु, व्यक्ति या विचार को चयन करना, निर्णय करना तथा निश्चय करना मूल्य है। हम किसी व्यक्ति को पसन्द करते हैं, किसी को नहीं, किसी की हम प्रशंसा करते हैं, किसी की नहीं। किसी कार्य को करना शुभ मानते हैं किसी को नहीं। किसी दृश्य को सुन्दर मानते हैं, किसी को नहीं। ये सारे निर्णय मूल्य की अवधारणा पर आधारित हैं। जैसे प्यासे को पानी पिलाना और घायल को अस्पताल पहुंचाना सही है, मूल्यवान है शुभ भी है। प्रत्येक समाज की एक मूल्य प्रणाली है, जिसे हम संस्कृति कहते हैं। उन्हें ही मनुष्य आदर्श, उद्देश्य, पसन्द एवं साध्य मानते हैं। अपना जीवन उन्हें प्राप्त करने में लगा देते हैं जैसे एक धार्मिक महिला

ISSN 2277-2359
Vol-12-Issue-02
February 2020

का व्रत रखना तथा स्वास्थ्य ठीक नहीं होने पर व्रत रखती है। मूल्य इच्छा, रूचि, पसन्द, मेहनत, संकल्प, शक्ति, कार्य, संतोष जैसे कारक पर निर्भर करते हैं। समाज की आवश्यकता या व्यक्ति की आवश्यकताओं का मूल्यों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। यथा मेरी आवश्यकता सदैव पूजा पाठ में रहती है तो मेरा मूल्य धार्मिक होगा। यथा एक युवती गुलाबी रंग को पसन्द करती है, वह गुलाबी रंग की वेशभूषा, गुलाबी पेन, पेड़, लिफाफा आदि का प्रयोग करती है इसे गुलाबी रंग क्यों अच्छा लगता है? उसके शरीर के रंग के साथ तालमेल हो, त्वचा पर अच्छा लगता हो, आंख को पसन्द हो। इस प्रकार की अनुभूति, रूचि, इच्छा पसन्द मूल्य का निर्माण करते हैं। सुख या दुःख की अनुभूति मूल्य है जिनसे सुख मिलता है उसे हम अपनाते हैं।

जीवन में तीन मूल्य प्राप्त करने चाहिए:

1. **सत्यम्-इन्द्रियां द्वारा अनुभूत संसार सत्य नहीं है, वह क्षणिक सुख देने वाला या कुछ समय आनन्द देने वाला है। मन और आत्मा को आनन्द देने वाला ही सत्य है। वह ब्रह्म ही सत्य है।**
2. **शिवम्-इन्द्रिय भोग, वासनाएं, क्रियाकलाप आदि कल्याणकारी नहीं है, वे क्षणिक सुख प्रदान करने वाले हैं, वे कल्याणकारी नहीं हो सकते हैं। आत्मज्ञान हमें वास्तविक सुख प्रदान करता है।**
3. **सुन्दरम्-भौतिक पदार्थ नाशवान है, उसकी सुन्दरता क्षणिक या नाशवान है, आत्मा का ज्ञान चिरस्थायी है जो सभी वस्तुओं में सौन्दर्य प्रकट नहीं करता जो क्षणिक है। अतः परमात्मा के दर्शन में सौन्दर्य व्यक्त करता है।**

भारतीय संस्कृति चार मूल्यों को प्राप्त करने की बात करती है-

1. **धर्म-क्षमा, सत्य, अक्रोध, अस्तेय, इन्द्रियनिग्रह, धृति, दम, धी, विद्या, शौच आदि मूल्य धर्म में समाहित है।**
2. **अर्थ-धन का ठीक वितरण हो, शोषण न हो, चोरी न हो, भ्रष्टाचार न हो प्रामाणिकता के साथ धनार्जन किया जाय।**
3. **काम-शरीर का सुख, मन का सुख तथा इन्द्रियां द्वारा प्राप्त सुख आदि को काम मूल्य माना है।**

Copyright©authors

ISSN 2277-2359
Vol-12-Issue-02
February 2020

4. **मोक्ष-जन्म-मरण से छुटकारा पाना, राग-द्वेष से मुक्त होना, संसार के प्रपंच में न पड़ना, कषायों से मुक्ति मोक्ष मूल्य है।**

यजुर्वेद के 40वें अध्याय में-सोने के ढ़क्कन से, ज्ञान का पात्र का मुख ढका हुआ है, हे साधक! तू उस ढ़क्कन को हटा दे, ताकि ज्ञान प्रकट हो सके।

- **प्यासे को जल पिलाना, मूल्यवान तथा शुभ है।**
- **चित्र सुन्दर है, लेकिन हत्या का चित्र है, मूल्यहीन तथा अशुभ है।**
- **निर्जला व्रत उचित है, स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। इस मूल्य को विचार करके ग्रहण करना चाहिए।**

मूल्यों का वर्गीकरण

1. **वैयक्तिक मूल्य: शुचिता, नियमितता, समय की पाबंदी, स्वावलम्बन, शिष्टाचार, आत्मनिर्भर, स्वच्छता, संयम, सादगी, स्वास्थ्य आदि वैयक्तिक मूल्य हैं।**
2. **सामाजिक मूल्य-समाज सेवा, संस्कृति संरक्षण, बड़ों का सम्मान, सहयोग, दूसरों का सम्मान, सामाजिक न्याय, अस्पृश्यता का विरोध, सहानुभूति, परस्पर स्नेह, संगठन में रहना, अकेला व्यक्ति विकास और जीवन निर्वाह नहीं कर सकता है। अतः सामाजिक मूल्य समूह में विकसित किये जा सकते हैं।**
3. **नैतिक मूल्य-ईमानदारी, सहयोग, सहभागिता, शांति, पवित्रता, उचित प्रक्रिया, परोपकार, सत्यता, चोरी न करना, नम्रता, निष्कपटता, नियम, सही कार्य करना, पंच महाव्रत।**
4. **चारित्रिक मूल्य-करूणा, दयालुता, सदाचार, सहानुभूति, सत्यता, सज्जनता, ईमानदारी आदि चारित्रिक मूल्य के घटक हैं।**
5. **आध्यात्मिक मूल्य-पूजा पाठ, भक्ति, धर्म निरपेक्षता, सभी धर्मों का आदर, आत्मानुशासन, तप, त्याग, इन्द्रिय नियंत्रण, आत्मनियंत्रण आदि।**
6. **सौन्दर्यात्मक मूल्य-गाना सुनकर आनन्द विभोर होना, प्रकृति प्रेम, वनों की रक्षा, सुन्दरता की प्रशंसा, कला, ड्रेस, संगीत, व्यक्तिगत बनावट, पर्यावरण जिसमें आनन्द की अनुभूति करते हैं, लेकिन वर्णन नहीं कर पाते हैं। जिस कार्य से हमें आनन्द की प्राप्ति होती है, जैसे हरियाली देखकर आनन्दित होना, चित्रों को देखकर झूम उठना आदि में सौन्दर्यानुभूति मूल्य हैं।**

Copyright©authors

ISSN 2277-2359
Vol-12-Issue-02
February 2020

7. राजनैतिक मूल्य-श्रेष्ठ नागरिक बनाना, देशभक्ति, राष्ट्रीय एकता, स्वतन्त्रता, समानता, धार्मिक स्वतन्त्रता, नेतृत्व, दल भावना, दल कार्य आदि राजैनतिक मूल्य हैं।
8. आर्थिक मूल्य-वस्तु संग्रह, धन संग्रह, फिजूल खर्ची न करना आदि।
9. धार्मिक मूल्य-अहिंसा, शांति, धर्मपरायणता, सत्य बोलना आदि।
10. शारीरिक मूल्य-स्वास्थ्य, व्यायाम, आसन, शारीरिक कार्य आदि।
11. प्रजातांत्रिक मूल्य-स्वतन्त्रता, समानता, शोषण के विरूद्ध अधिकार, धार्मिक स्वतन्त्रता का अधिकार, सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक अधिकार, संवैधानिक उपचार का अधिकार आदि।
12. पारिवारिक मूल्य-समायोजन, सहयोग, प्रेम, दया, करूणा आदि।

निष्कर्ष

मूल्य वस्तु की गुणवत्ता, महत्त्वता व लाभकारिता पर निर्धारित होता है। कोई भी वस्तु, व्यक्ति, पदार्थ, संस्थान आदि जितने अधिक गुणकारी, उपयोगी व लाभकारी हांगे उतने ही अधिक मूल्यवान हांगे। व्यक्ति की इच्छा, पसन्द, रूचियां, आकांक्षाएं मूल्य को अभिव्यक्त करती है। मूल्य के बिना जीवन सार्थक नहीं है। जीवन में सत्यम् शिवम् सुन्दरम् को तथा भारतीय संस्कृति के धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष मूल्य को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। शिक्षाविदों ने मूल्यों का वर्गीकरण अलग-अलग ढंग से किया है, उनमें से प्रमुख मूल्य वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, चारित्रिक, आध्यात्मिक, सौन्दर्यात्मक, राजनैतिक, धार्मिक, शारीरिक, पारिवारिक, प्रजातांत्रिक आदि मूल्यों के वर्गीकरण में भी मूल्यों के घटक समाहित हैं। ये सभी मानव जीवन के लिए परमोपयोगी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पाण्डेय, रमाशंकर, (2000) मूल्य शिक्षा के परिप्रेक्ष्य, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।
2. पांड्या, शकुन्तला, (1986) जीवन मूल्य, राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर
3. पाण्डेय, रामशक्ल, (1991) मूल्य मीमांसा, रीजनल कॉलेज ऑफ एजूकेशन, अजमेर।
4. राममूर्ति आयोग, (1990) वैल्यूज एजूकेशन।
5. पाण्डेय, गोविन्द चन्द्र, (1978) मूल्य मीमांसा, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।